

योग कोश भाग-१ (फोल्डर नं. ०६०२८)
सम्पादक – श्रीचन्द्र चोरडिया

मुख्य टाइटल	
समर्पण	
संकलन-सम्पादन में प्रयुक्त ग्रंथों की संकेत-सूची	
जैन वाङ्मय का दशमलव वर्गीकरण	
०४ जीव परिणाम का वर्गीकरण	
दो शब्द	
प्रकाशकीय	
भूमिका	
प्रस्तावना	
आशीर्वचन	
विषय-सूची	
शब्द विवेचन -----	१
शब्द व्युत्पत्ति -----	१
प्राकृत में जोग शब्द की व्युत्पत्ति -----	१
पाली में योग शब्द की व्युत्पत्ति -----	१
संस्कृत में योग शब्द की व्युत्पत्ति -----	२
विभिन्न भाषाओं में जोग शब्द के विभिन्न अर्थ-----	२
प्राकृत भाषा में जोग शब्द के अर्थ -----	२
पाली भाषा में योग शब्द के अर्थ -----	३
संस्कृत भाषा में योग शब्द के अर्थ -----	३
योग शब्द के पर्यायवाची शब्द -----	३
सविशेषण ससमास सप्रत्यय जोग शब्द की परिभाषा -----	६
परिभाषा के उपयोगी पाठ -----	६७
वीर्यान्तराय कर्म का क्षय-क्षयोपशम -----	६७
लेश्यासहित वीर्य-पराक्रम योग है -----	६७
योग परिणाम-जीव परिणाम का भेद -----	६७
द्रव्य योग पुद्गल है -----	६८
योग मूल प्रत्यय हैं-----	६८
पायाश्रव का कारण -----	६८
योग कर्म का निमित्त है -----	६८
योग अजीव द्रव्य परिणाम है -----	६९
योग क्षीरास्रव आदि लब्धकलाप है -----	६९

योग आस्रव द्वार है -----	६९
योग मार्गणा का एक भेद है -----	६९
योग सत्य पर्याप्ति का एक भेद है -----	६९
योग द्वार का एक भेद है -----	७०
योग बंध का कारण -----	७०
मनोयोग की परिभाषा -----	७०
सत् मनोयोग की परिभाषा -----	७१
असत्य मनोयोग की परिभाषा -----	७२
सत्यमृषा मनोयोग की परिभाषा-----	७३
असत्यामृषा मनोयोग की परिभाषा -----	७३
वचनयोग की परिभाषा -----	७४
सत्यवचन योग की परिभाषा -----	७५
असत्य वचन योग की परिभाषा-----	७५
सत्यमृषा वचन योग की परिभाषा -----	७५
असत्यामृषा वचनयोग की परिभाषा -----	७५
सत्यवचन योग की परिभाषा -----	७६
मृषावचन योग की परुभाषा -----	७६
सत्यमृषा वचन योग की परिभाषा -----	७६
असत्यामृषावचन योग की परिभाषा -----	७६
काययोग के लक्षण (परिभाषा) -----	७७
औदारिक मिश्र काययोग की परिभाषा -----	७७
औदारिक मिश्र काययोग की परिभाषा -----	७८
वैक्रिय काययोग की परिभाषा -----	८०
औदारिक काययोग की परिभाषा -----	८१
वैक्रियमिश्र काययोग की परिभाषा -----	८२
आहारक काय योग की परिभाषा -----	८३
आहारकमिश्र काययोग की परिभाषा -----	८३
कर्मण काययोग की परिभाषा -----	८४
सत्य मनोयोग का लक्षण -----	८६
असत्य मनोयोग के लक्षण -----	८६
सत्यमृषा मनोयोग के लक्षण -----	८७
असत्यामृषा मनोयोग के लक्षण -----	८७
सत्य वचनयोग का लक्षण -----	८७
मृषा वचनयोग का लक्षण -----	८७
सत्यमृषा वचनयोग के लक्षण -----	८७

असत्यामृषा वचनयोग का लक्षण -----	८७
औदारिक काययोग का लक्षण -----	८८
औदारिकमिश्र काययोग का लक्षण-----	८८
वैक्रिय काययोग का लक्षण -----	८८
वैक्रियमिश्र काययोग का लक्षण -----	८८
आहारक काययोग का लक्षण -----	८८
आहारकमिश्र काययोग का लक्षण -----	८९
कर्मण काययोग का लक्षण -----	८९
परिभाषा के उपयोगी पाठ (आगम सम्मत) -----	८९
द्रव्ययोग की परिभाषा के उपयोगी पाठ (वर्ण-गंध-रस-स्पर्श) -----	८९
पुदगल भी वर्ण-गंध-रस-स्पर्शी हैं अतः द्रव्ययोग पुदगल हैं -----	८९
द्रव्ययोग पुदगल हैं अतः पुदगल के गुण भी द्रव्ययोग में हैं -----	८९
योग और गुरु-लघु हैं -----	९०
द्रव्ययोग गुरु-लघु-अगुरु-लघु हैं -----	९०
द्रव्ययोग अजीवोदय निष्पन्न भाव हैं क्योंकि जीव द्वारा ग्रहण होने के बाद द्रव्य योग प्रायोगिक परिणामन होता हैं-----	९०
द्रव्ययोग जीव ग्राह्य हैं -----	९१
द्रव्ययोग चतुस्पर्शी भी हैं, अष्टस्पर्शी भी हैं -----	९१
द्रव्ययोग अनंतस्पर्शी हैं -----	९१
द्रव्ययोग असंख्यात प्रदेशी क्षेत्र अवगाह करता हैं -----	९१
द्रव्ययोग की अनंत वर्गणा होती हैं -----	९१
द्रव्ययोग के असंख्यात स्थान हैं -----	९१
भावयोग की परिभाषा के उपयोगी पाठ -----	९१
भावयोग जीव परिणाम हैं -----	९१
भावयोग अवर्णी-अगंधी-अरधी अस्पर्शी हैं -----	९१
भावयोग अवर्णी-अगंधी-अरधी अस्पर्शी हैं तथा जीव परिणाम हैं अतः जीव हैं -----	९१
भावयोग अगुधलघु हैं -----	९२
भावयोग उदय निष्पन्न भाव हैं -----	९२
विभिन्न आचार्यों द्वारा की गई परिभाषा -----	९२
योग के भेद -----	१०४
दो भेद-----	१०४
द्रव्य और भाव -----	१०५
प्रशस्त-अप्रशस्त -----	१०५
शुभ-अशुभ -----	१०५
योग परिणाम के भेद -----	१०५

योग के तीन भेद -----	१०५
जीव और प्रयोग-----	१०६
प्रयोग के चार भेद -----	१०६
योग के पन्द्रह भेद -----	१०६
प्रयोग के पन्द्रह भेद -----	१०७
ऐकांतानुवृद्धि योग का स्वामित्व-----	१०७
उपपाद योग का स्वामित्व -----	१०७
परिणाम योग का स्वामित्व-----	१०७
वचन योग के भेद-----	१०८
मनयोग के भेद -----	१०८
सत्य (वचनयोग) के भेद -----	१०८
मृषा वचनयोग के भेद -----	१०८
सत्यमृषा वचनयोग के भेद -----	१०९
काययोग के भेद -----	१०९
योग पर विवेचन -----	१०९
लेश्या और कर्म -----	१२२
सलेशी और सयोगी -----	१२२
योग आश्रव और लेश्या -----	१२३
योग और प्रमाद आस्रव -----	१२३
योग और लेश्या -----	१२३
योग और निर्जरा -----	१२३
अयोग संवर और भाव -----	१२४
योग और आत्मा -----	१२४
योग और धर्म-अधर्म -----	१२४
योग आत्मा एक नहीं-अनेक हैं -----	१२४
योग आत्मा और सावध-निरवध -----	१२४
योग और भाव आत्मा -----	१२५
योग आत्मा द्रव्य जीव नहीं हैं-भाव जीव हैं -----	१२५
योग आत्मा और कर्म बंधन का टूटना -----	१२५
योग और करनी -----	१२५
अशुभ योग और मुनि -----	१२५
योग आत्मा और सर्व उत्तर गुण -----	१२५
योग आत्मा और देस उत्तर गुण -----	१२५
योग आत्मा और निर्जरा -----	१२६
योग आत्मा और कर्म -----	१२६

योग और प्रमाद आस्रव -----	१२६
योग आत्मा और भाव -----	१२७
योग आत्मा (अशुभ योग निन्दनीय भी हैं ।) -----	१२७
योग आत्मा और सप्रदेशी-अप्रदेशी -----	१२७
योग आत्मा और उपयोग -----	१२७
योग आत्मा और कार्य रूप-व्यापार -----	१२७
योग आत्मा और नियमा-भजना -----	१२७
योग आत्मा और आहार -----	१२८
योग और स्नातक निर्गन्थ-----	१२८
योग और गुणस्थान -----	१२८
योग और आस्रव -----	१२९
मिथ्यादृष्टि में कितने योग -----	१२९
योग का नय और निक्षेप की अपेक्षा विवेचन -----	१२९
नय की अपेक्षा योग का विवेचन -----	१२९
वचन योग और मनोयोग पर नय की अपेक्षा विवेचन -----	१३०
योग का निक्षेप की अपेक्षा विवेचन -----	१३०
द्रव्य योग और भाव योग -----	१३२
मनोयोग का मूल कारण -----	१३४
वचनयोग का मूल कारण -----	१३४
वैक्रियकाय योग की संभावना -----	१३४
सयोगी केवीली के मनोयोग की संभावना -----	१३४
योग स्थान -----	१३५
द्रव्ययोग और स्थान -----	१३७
भाव योग और स्थान -----	१४०
योग स्थान प्ररूपणा के कारण -----	१४०
द्रव्ययोग (प्रायोगिक) अजीव हैं, रूपी हैं-----	१४१
द्रव्ययोग की स्थिति -----	१४२
द्रव्ययोग और भाव -----	१४२
योगस्थान के दस अनुयोग द्वार -----	१४२
औधिक सयोगी जीवोंमें अल्पबहुत्व -----	१४३
योग और द्रव्य परिणाम -----	१४३
मनोयोगी और वचनयोगी तथा एक द्रव्य परिणाम -----	१४३
काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१४५
औदारिक काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१४६
औदारिकमिश्र काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१४८

वैक्रिय काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१४८
वैक्रियमिश्र काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१४९
आहारक काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१५०
आहारकमिश्र काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१५०
कार्मण काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -----	१५१
मनोयोगी और वचनयोगी और दो द्रव्य परिणाम -----	१५२
सयोगी जीव और तीन द्रव्य परिणाम -----	१५३
सयोगी जीव और चार द्रव्य परिणाम -----	१५४
द्रव्ययोग को जीवग्रहण करता है -----	१५४
सयोगी और द्रव्य-ग्रहण -----	१५५
योगवर्गणा और लेश्या -----	१५६
भाव योग (प्रायोगिक) अरूपी है जीव है -----	१५६
भाव योग जीव परिणाम है -----	१५६
भाव जोग की स्थिति-----	१५६
भाव योग और भाव -----	१५६
भाव योग और उपयोग -----	१५७
भाव योग की चंचलता-अस्थिर योग -----	१५७
भाव योग और वर्गणा -----	१५८
योग और भाषा -----	१५९
योग और परमपुण्य का उपार्जन -----	१६०
प्रदेशबंध और योगस्थान -----	१६०
प्रथम सम्यक्त्व को प्राप्त करनेवाला जीव और योग -----	१६१
भाव योग-प्रकृति और प्रदेशबंध का हेतु -----	१६१
भावयोग और निर्जरा -----	१६२
भावयोग की परिभाषा -----	१६२
भावयोग के भेद -----	१६२
योग और संवर-----	१६२
भावयोग परिणाम के भेद -----	१६३
विभिन्न जीवों में योग परिणाम-----	१६३
नारकियों में -----	१६३
भवनपति देव में -----	१६३
वाणव्यंतर देव में -----	१६३
ज्योतिषी देव में -----	१६३
वैमानिक देव में -----	१६३
तिर्थच में -----	१६४

पृथ्वी काय में -----	१६४
अप्काय में -----	१६४
तेउकाय में -----	१६४
वायुकाय में -----	१६४
वनस्पतिकाय में -----	१६४
द्वीन्द्रिय में -----	१६४
त्रीन्द्रिय में -----	१६४
चतुरिन्द्रिय में -----	१६४
तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	१६५
मनुष्य में -----	१६५
योग और जीव -----	१६५
योग की अपेक्षा जीवन के भेद -----	१६५
जीवों के दो भेद -----	१६५
जीवों के तीन भेद -----	१६६
जीव के चार भेद -----	१६६
योग की अपेक्षा जीव की वर्गणा -----	१६६
विभिन्न जीवों में योग -----	१६६
औधिक जीव में -----	१६६
औधिक अपर्यास जीवों में -----	१६८
औधिक पर्यास जीवों में -----	१६९
औधिक नारकी में -----	१७०
औधिक नारकी अपर्यास जीवों में -----	१७१
औधिक नारकी पर्यास जीवों में -----	१७२
प्रथम पृथ्वी के नारकी में -----	१७२
प्रथम पृथ्वी के अपर्यास नारकी में -----	१७२
प्रथम पृथ्वी के पर्यास नारकी में -----	१७२
द्वितीय पृथ्वी के नारकी में -----	१७३
द्वितीय पृथ्वी के अपर्यास नारकी में -----	१७३
द्वितीय पृथ्वी के नारकी में -----	१७३
द्वितीय पृथ्वी के अपर्यास नारकी में -----	१७३
द्वितीय पृथ्वी के पर्यास नारकी में -----	१७४
तृतीय औधिक नारकी में -----	१७४
तृतीय पृथ्वी के अपर्यास नारकी में -----	१७५
तृतीय पृथ्वी के पर्यास नारकी में -----	१७५
चतुर्थ पृथ्वी औधिक नारकियों में -----	१७५

चतुर्थ पृथ्वी अपर्याप्त नारकियों में -----	१७५
चतुर्थ पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -----	१७६
पंचम पृथ्वी के औघिक नारकियों में -----	१७६
पंचम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकियों में -----	१७६
पंचम पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -----	१७६
षष्ठम पृथ्वी के औघिक नारकियों में-----	१७६
षष्ठम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकियों में -----	१७७
षष्ठम पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -----	१७७
सप्तम पृथ्वी के औघिक नारकियों में -----	१७७
सप्तम पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -----	१७८
सप्तम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकियों में -----	१७८
औघिक तिर्यचों में -----	१७८
अपर्याप्त तिर्यचों में -----	१७९
पर्याप्त तिर्यचों में -----	१७८
औघिक एकेन्द्रियों में -----	१७९
अपर्याप्त एकेन्द्रियों में -----	१८०
पर्याप्त एकेन्द्रियों में -----	१८०
सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -----	१८०
अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -----	१८०
पर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -----	१८०
लब्धि अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -----	१८०
निर्वृत्ति पर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -----	१८०
बादर एकेन्द्रियों में -----	१८१
बादर अपर्याप्त एकेन्द्रियों में -----	१८१
पर्याप्त बादर एकेन्द्रियों में -----	१८१
लब्धि अपर्याप्त बादर एकेन्द्रियों में -----	१८१
निर्वृत्ति पर्याप्त बादर एकेन्द्रियों में -----	१८१
पृथ्वीकाय में -----	१८२
अपर्याप्त पृथ्वीकाय में -----	१८२
पर्याप्त पृथ्वीकाय में -----	१८२
सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -----	१८२
अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -----	१८२
पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -----	१८२
लब्धि अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -----	१८२
निर्वृत्ति पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -----	१८३

पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -----	१८३
बादर पृथ्वीकाय में -----	१८३
अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में -----	१८३
पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में -----	१८३
लब्धि अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में -----	१८३
निर्वृत्ति पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में -----	१८३
अप्काय में -----	१८४
अपर्याप्त अप्काय में -----	१८४
पर्याप्त अप्काय में -----	१८४
सूक्ष्म अप्काय में -----	१८४
अपर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में -----	१८४
पर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में -----	१८५
लब्धि पर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में -----	१८५
निर्वृत्ति पर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में -----	१८५
बादर अप्काय में -----	१८५
अपर्याप्त बादर अप्काय में -----	१८५
पर्याप्त बादर अप्काय में -----	१८५
लब्धि-अपर्याप्त बादर अप्काय में -----	१८६
निर्वृत्ति पर्याप्त बादर अप्काय में -----	१८६
तेउकाय में -----	१८६
अपर्याप्त तेउकाय में -----	१८६
पर्याप्त तेउकाय में -----	१८६
सूक्ष्म तेउकाय में -----	१८७
अपर्याप्त सूक्ष्म तेउकाय में -----	१८७
पर्याप्त सूक्ष्म तेउकाय में -----	१८७
लब्धि अपर्याप्त सूक्ष्म तेउकाय में -----	१८७
निर्वृत्ति सूक्ष्म तेउकाय में -----	१८७
बादर तेउकाय में -----	१८७
अपर्याप्त बादर तेउकाय में -----	१८८
पर्याप्त बादर तेउकाय में -----	१८८
लब्धि बादर तेउकाय में -----	१८८
निर्वृत्ति बादर तेउकाय में -----	१८८
वायुकाय में -----	१८९
अपर्याप्त वायुकाय में -----	१८९
पर्याप्त वायुकाय में -----	१८९

सूक्ष्म वायुकाय में -----	१८९
अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -----	१८९
पर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -----	१८९
लब्ध अपर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -----	१८९
निर्वृत्ति अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -----	१९०
बादर वायुकाय में -----	१९०
अपर्याप्त बादर वायुकाय में -----	१९०
पर्याप्त बादर वायुकाय में -----	१९०
लब्धि बादर वायुकाय में -----	१९०
निर्वृत्ति बादर वायुकाय में -----	१९०
वनस्पतिकाय में -----	१९१
अपर्याप्त वनस्पतिकाय में -----	१९१
पर्याप्त वनस्पतिकाय में -----	१९१
प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय में -----	१९१
अपर्याप्त वनस्पतिकाय में -----	१९१
पर्याप्त वनस्पतिकाय में -----	१९१
लब्धि अपर्याप्त प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय में -----	१९२
निर्वृत्ति पर्याप्त प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय में -----	१९२
साधारण वनस्पतिकाय में -----	१९२
अपर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में -----	१९२
पर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में -----	१९२
सूक्ष्म साधारण शरीर वनस्पतिकाय में -----	१९२
अपर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में -----	१९३
पर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में -----	१९३
उत्पल आदि दस प्रत्येक वनस्पतिकाय में -----	१९३
शाली बीहि आदि वनस्पतिकाय में -----	१९४
द्वीन्द्रिय में -----	१९५
त्रीन्द्रिय में -----	१९५
चतुरिन्द्रिय में -----	१९५
असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	१९५
तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	१९६
तिर्यच पंचेन्द्रिय स्त्री-जीव में -----	१९६
मनुष्य में पन्द्रह प्रकार के प्रयोग -----	१९७
मनुष्य में -----	१९७
मनुष्यणी में -----	१९८

लब्धि अपर्याप्त मनुष्य में -----	१९९
देव में -----	१९९
देवी में -----	१९९
भवनपति देव में -----	२००
वाणव्यंतर देव में -----	२००
ज्योतिषी देव में -----	२००
भवनपति देवी में -----	२००
वाणव्यंतर देवी में -----	२००
ज्योतिषी देवी में -----	२००
वैमानिक देव में -----	२००
वैमानिक देवी में -----	२००
वैमानिक देव के विभिन्न भेदों में -----	२०१
सौधर्म ईशानदेव में -----	२०१
सनत्कुमार माहेन्द्र देव में -----	२०१
ब्रह्म-ब्रह्मोत्त देव में -----	२०१
लांतव कापिष्ठ देवों में -----	२०
शुक्र-महाशुक्र देवों में -----	२०२
शतार सहस्रार कल्पवासी देवों में -----	२०२
आनत-प्रामत-आरण-अच्युत कल्पवासी देवों में -----	२०२
नौ ग्रैवेयक कल्पातीत देवों में -----	२०२
नौ अनुदिश विमानवाली देवों में -----	२०२
चार अनुत्तर विमानवासी देवों में -----	२०३
सर्वार्थ सिद्धि देवों में -----	२०३
संज्ञी जीव में -----	२०३
असंज्ञी जीव में -----	२०४
सकायिक जीव में -----	२०४
त्रसकायिक जीव में -----	२०४
सङ्न्द्रिय जीव में -----	२०५
अनिन्द्रिय जीव में -----	२०५
सयोगी जीव में -----	२०५
मनोयोगी में -----	२०५
सत्य मनोयोगी में -----	२०६
मृषा मनोयोगी जीव में -----	२०६
सत्यमृषा मनोयोगी जीव में -----	२०६
असत्यमृ मनोयोगी जीव में -----	२०६

वचनयोगी जीव में -----	२०६
सत्य वचनयोगी जीव में-----	२०७
मृषा जीव में -----	२०७
सत्यमृषा -----	२०७
असत्यमृषा वचनयोगी जीव में -----	२०७
काययोगी जीव में -----	२०८
औदारिक काय योगी में -----	२०९
औदारिक मिश्र काययोगी में -----	२०९
वैक्रिय काययोगी में -----	२१०
वैक्रिय मिश्र काययोगी में -----	२११
आहारक काययोगी में -----	२११
आहारक मिश्र काययोगी में -----	२११
कर्मण काययोगी में -----	२११
अयोगी में -----	२११
सयोगी में-----	२१२
स्त्री वेदी में -----	२१२
पुरुष वेदी में-----	२१२
नपुंसक वेदी में -----	२१३
अपगतवेदी में -----	२१४
सकषायी में -----	२१४
क्रोध कषायी में -----	२१५
मान कषायी में -----	२१५
माया कषायी में -----	२१६
लोभ कषायी में -----	२१६
अकषायी में -----	२१६
मति अज्ञानी में -----	२१६
श्रुत अज्ञानी में -----	२१६
विभंग अज्ञानी में -----	२१७
मति ज्ञानी में -----	२१७
श्रुत ज्ञानी में-----	२१७
अवधि ज्ञानी में -----	२१७
मनःपर्यव ज्ञानी में -----	२१८
केवल ज्ञानी में -----	२१८
चक्षुदर्शनी में -----	२१८
अचक्षु दर्शनी में -----	२१८

अवधि दर्शनी में -----	२१९
केवल दर्शनी में -----	२१९
सलेशी में -----	२२०
कृष्ण लेशी में -----	२२०
नील लेशी में -----	२२०
कापोत लेशी में -----	२२१
तेजो लेशई में -----	२२१
पद्म लेशई में -----	२२२
शुक्ल लेशी में -----	२२३
अलेशी में -----	२२३
भवसिद्धिक में -----	२२४
अभवसिद्धिक में -----	२२४
आहारक में -----	२२४
अनाहारक में -----	२२५
सम्यग्दृष्टि में -----	२२६
असंयत में -----	२२८
संयत में -----	२२८
निर्ग्रथ में -----	२३०
अश्रुत्वा केवली में -----	२३१
श्रुत्वा केवली के होने वाले जीव के अवधि ज्ञान प्राप्ति करने की अवस्था में -----	२३१
किसी एक योनि से स्व-पर योनि में उत्पन्न होने योग्य जीवों में कितने योग -----	२३२
महायुग्म जीवों में योग -----	२५७
लेशी महायुग्म में योग -----	२५९
भवसिद्धिक महायुग्म में योग -----	२६०
अभवसिद्धिक महायुग्म में योग -----	२६१
महायुग्म द्वीन्द्रिय में योग -----	२६१
महायुग्म तेइन्द्रिय में योग -----	२६२
महायुग्म में चतुरिन्द्रि में योग -----	२६२
महायुग्म असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय में योग -----	२६२
महायुग्म संज्ञी पंचेन्द्रि में योग -----	२६२
सयोगी और गुणस्थान की अपेक्षा योग -----	२६७
एकेन्द्रिय में योग -----	२६७
जीव समूहों में योग -----	२६८
योग और जीव -----	२६८
मनोयोग किसके होता है -----	२६८

असत्य मनोयोग-उभय मनोयोग किसके होता है -----	२७०
वचनयोग किसके होता है -----	२७
मृषावचनयोग-सत्य मृषा वचनयोग किसके होता है -----	२७२
आहारक-आहारकमिश्र काययोग किसके होता है -----	२७३
वैक्रिय वैक्रियमिश्र काययोग किसके होता है -----	२७४
औदारिक काययोग किसके होता है -----	२७५
कर्मण काययोग किसके होता है -----	२७६
विविध योग जीव में-----	२८०
एकयोगी -----	२८९
विविन्न जीव और योग स्थिति -----	२८९
सयोगी जीव की सयोगीत्व की अपेक्षा स्थिति -----	२८९
सयोगी जीव अनाहारिक केवली -----	२९१
लेश्या और योग का तादात्म्य -----	२९१
सयोगी जीव और संवर की स्थिति -----	२९२
प्रथमानुगम की अपेक्षाकृति -----	२९२
संजयानुगम में क्षेत्रानुगम की अपेक्षा योगी जीवों की क्षेत्र-स्थिति -----	२९३
स्पर्शानुगम में संचित योगी जीवों का स्पृष्ट क्षेत्र -----	२९३
अयोगी जीव अनाहारक होते हैं -----	२९४
सिद्ध-योग व लेश्या रहित होते हैं -----	२९४
विशेष जीवों में -----	२९४
मकई आदि वनस्पतिकाय में -----	२९४
अलसी आदि वनस्पतिकाय में -----	२९५
बांस आदि वनस्पतिकाय में -----	२९५
इक्षु आदि वनस्पतिकाय में -----	२९५
सेडिय आदि तृष्ण विशेष वनस्पतिकाय में-----	२९५
अभ्रूरुह आदि वनस्पतिकाय में -----	२९६
तुलसी आदि वनस्पतिकाय में -----	२९६
ताल-तमाल आदि वनस्पतिकाय में -----	२९६
लीमड़ा, आम आदि वनस्पतिकाय में -----	२९७
अगस्तिक आदि वनस्पतिकाय में -----	२९७
बैंगन आदि वनस्पतिकाय में -----	२९७
सिरियक आदि वनस्पतिकाय में-----	२९८
पूसफलिका आदि वनस्पतिकाय में -----	२९८
आलुक आदि साधारण वनस्पतिकाय में -----	२९८
लोही आदि वनस्पतिकाय में -----	२९९

आय आदि वनस्पतिकाय में -----	२९९
पाठा आदि वनस्पतिकाय में -----	२९९
मासवर्णी आदि वनस्पतिकाय में -----	२९९
पृथ्वीकाय में -----	३००
अष्काय में -----	३००
वनस्पतिकाय में-----	३०१
तेउकाय में -----	३०१
वायुकाय में -----	३०१
द्वीन्द्रिय में -----	३०१
त्रीन्द्रिय में -----	३०१
चतुरिन्द्रिय में -----	३०२
नारकी में -----	३०२
संमुच्छिन्न तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०२
जलचर संमुच्छिन्न तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०२
स्थलचर संमुच्छिन्न तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०२
खेचर संमुच्छिन्न तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०३
गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०३
जलचर गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०३
स्थलचर गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०३
खेचर गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रिय में -----	३०४
मनुष्य में -----	३०४
संमुच्छिन्न मनुष्य में -----	३०४
गर्भज मनुष्य में -----	३०४
औधिक देव में -----	३०४
गुणस्थान के अनुसार जीव में -----	३०४
चौदह जीव-भेद के अनुसार जीव में -----	३०५
जीव और योग समपद -----	३०६
सयोगी जीव और अन्तर काल -----	३०७
जीव समूहों में कितने योग -----	३०९
पृथ्वीकायिक जीव समूहों में योग -----	३०९
अष्कायिक जीव समूहों में योग -----	३०९
अग्निकायिक जीव समूहों में योग -----	३०९
वायुकायिक जीव समूहों में योग -----	३०९
वनस्पतिकायिक जीव समूहों में योग -----	३०९
द्वीन्द्रिय जीव समूहों में योग -----	३१०

त्रीन्द्रिय जीव समूहों में योग -----	३१०
चतुरिन्द्रिय जीव समूहों में योग -----	३१०
पंचेन्द्रिय जीव समूहों में योग -----	३१०
सयोगी जीव -----	३१०
सयोगी जीव और समपद -----	३१०
सयोगी जीव और प्रथम-अप्रथम -----	३११
अयोगी जीव और अप्रथम -----	३११
सयोगी जीव और चरम-अचरम -----	३११
सयोगी जीव की सयोगीत्व की अपेक्षा स्थिति -----	३१२
सयोगी जीव का, सयोगी की अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१२
मनोयोगी और वचनयोगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१२
काययोगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१४
औदारिक काययोगी तथा औदारिक मिश्रकाययोगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१४
वैक्रिय काय योगी की एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१५
वैक्रिय मिश्रकाय योगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१६
आहारक काययोगी तथा आहार-मिश्र-काययोगी का एक जीव भी अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१८
कर्मणकाय योगी का एक जीव का अपेक्षा अन्तरकाल -----	३१९
अयोगी का अन्तरकाल -----	३२०
अध्ययन, गाथा, सूत्र आदि की संकेत सूची -----	३२०
संकलन सम्पादन अनुसंधान में प्रमुख ग्रन्थों की सूची -----	३२१
वर्धमान जीवनकोश, द्वितीय खण्ड पर प्राप्त समीक्षा -----	३२३
वर्धमान जीवनकोश प्रथम खण्ड पर प्राप्त समीक्षा -----	३२४
मिथ्यात्वी का आध्यात्मिक विकास पर प्राप्त समीक्षा -----	३२७
लेश्या-कोश पर विद्वानों की सम्मति -----	३३०
क्रिया कोश पर प्राप्त समीक्षा -----	३३२
वर्धमान जीवन कोश पर प्राप्त समीक्षा -----	३३५